द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी.एड.)

क्रेडिट आधारित पाठ्यक्रम

शैक्षणिक सत्र **2024-2026** से लागू

B.Ed Two Years Credit Based Curriculum

(As per NCTE-2014 Regulation and NEP-2020)

शिक्षापीठ

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली–110016

शिक्षाशास्त्री (बी.एड.) प्रथम वर्ष
प्रथम सेमेस्टर पाठ्यक्रम स्वरूप

कुल अंक = 600 | कुल क्रेडिट्स = 24+2*

कोर्स कोड (Course code)	कोर्स संख्या (course No.)	कोर्स का नाम (Name of the course)	कोर्स श्रेणी (Course Category)	कुल अंक (Total Marks)	कुल क्रेडिट्स (Total Credits)	घण्टे/सप्ताह (Hours/ weeks)	घण्टे/सेमेस्टर (Hours/ Semester)
	Theory (सैद्धान्तिक)			**500**	**20**	**20**	**400**
101	1	शिक्षा का दार्शनिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य (Philosophical & Sociological Perspectives of Education)	संकेन्द्रिक परिप्रेक्ष्य (Core Perspective)	100 75 (E)+25 (I)	4	4	80
102	2	अधिगम तथा विकास का मनोविज्ञान (Psychology of Learning & Development)	संकेन्द्रिक परिप्रेक्ष्य (Core Perspective)	100 75 (E)+25 (I)	4	4	80
103	3	शिक्षण अधिगम में सूचना सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी (Information Communication Technology in Teaching Learning)	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)	100 75 (E)+25 (I)	4	4	80
104	4	विद्यालय प्रबन्धन एवं नेतृत्व (School Management & Leadership)	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)	100 75 (E)+25 (I)	4	4	80
105	5	शास्त्र शिक्षण(कोई एक) Teaching of Shastra(Any One)	वैकल्पिक शिक्षणशास्त्र (Elective Pedagogy)	100 75 (E)+25 (I)	4	4	80
	5-I	ज्योतिष शिक्षण (Teaching of Jyotish)					
	5-II	साहित्य शिक्षण (Teaching of Sahitya)					
	5-III	दर्शन शिक्षण (Teaching of Darshan)					
	5-IV	व्याकरण शिक्षण(Teaching of Vyakaran)					
	5-V	वेद शिक्षण(Teaching of Veda)					
	5-VI	कर्मकाण्ड शिक्षण(Teaching of Karamkhand)					
111	**प्रायोगिक – ई.पी.सी. (Practicum- EPC)**		प्रायोगिक– ई.पी.सी.	**100**	**04**	**04**	**80**
	(i)	संप्रेषण कौशल (Communication Skills)	50		02		
	(ii)	सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग (Application of Information & Communication Technology)	50		02		
112	**शैक्षिक गतिविधियाँ (Educational Activities)**		**अनिवार्य Compulsory**	**50**	**2***	**उपस्थिति = 80% (Attendance)**	
	(i)	संस्कृत सम्भाषण					
	(ii)	विश्वविद्यालय एवं विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में प्रतिभाग					
	(iii)	खेल–कूद/ प्राथमिक चिकित्सा					
	(iv)	सांस्कृतिक कार्यक्रम					
	(v)	सामाजिक गतिविधियाँ					

1. शिक्षा का दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

(Philosophical and Sociological Perspectives of Education)

कोर्स कोड = 101
कुल क्रेडिटस = 04

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे/सप्ताह
कुल अंक = 100

कोर्स अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes)

इस कोर्स के अध्ययनोपरान्त विद्यार्थीः–

– शिक्षा की अवधारणा का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
– प्रमुख दार्शनिक विचारधाराओं का शिक्षा पर प्रभाव का अवबोध कर सकेंगे।
– भारतीय तथा पाश्चात्य सामाजिक चिन्तकों के विचारों को जान सकेंगे।
– शिक्षा और समाज के अन्तर्सम्बन्ध की अन्त:दृष्टि विकसित कर सकेगें।
– सामाजिक चिन्तकों के विचारों से परिचित हो सकेगें।
– मूल्य शिक्षा की अवधारणा एवं संवैधानिक मूल्यों से अवगत हो सकेंगे।
– पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्या विकास की प्रक्रियाओं को समझ सकेंगें

पाठ्य–वस्तु (Content)

75 अंक

इकाई – १ : शिक्षा की अवधारणा– शिक्षा का अर्थ, उद्देश्य एवं प्रकृति, शिक्षा एवं ज्ञान, शिक्षा एवं विद्या (परा–अपरा)। शिक्षा के प्रकार– औपचारिक, अनौपचारिक, निरौपचारिक (अर्थ, अवधारणा, उद्देश्य, प्रकृति, अभिकरण के सन्दर्भों में)।

इकाई – २ : शिक्षा और दर्शन– दर्शन की अवधारणा (अर्थ एवं उद्देश्य, प्रकृति) तत्त्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा एवं मूल्यमीमांसा (सांख्ययोग, न्याय, वैशेषिक के शैक्षिकनिहितार्थ)। दर्शन एवं शिक्षा में सम्बन्ध। भारतीय चिन्तक– स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गाँधी। पाश्चात्य चिन्तक- फ्रोबेल और ड्यूवी (शिक्षा, उद्देश्य, विधियाँ एवं संस्थाएँ)।

इकाई –३ : शिक्षा और समाज– भारतीय समाज की अवधारणा (अर्थ एवं उद्देश्य, प्रकृति), शिक्षा एवं समाज में सम्बन्ध। व्यक्ति (बालक/अधिगमकर्ता) के सामाजिक विकास में शिक्षा की भूमिका। सामाजिक परिवर्तन एवं शिक्षा, संस्कृति एवं शिक्षा। सामाजिक चिन्तक– सावित्री बाई फुले, पं. मदन मोहन मालवीय।

इकाई –४ : मूल्य शिक्षा– मूल्य शिक्षा की अवधारणा, मूल्य विकास में शिक्षा की भूमिका, भारतीय संविधान में निहित मूल्य एवं कर्तव्य तथा नैतिकता।

इकाई –५ : पाठ्यचर्या विकास– पाठ्यचर्या विकास का अर्थ, पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम में अन्तर । पाठ्यचर्या विकास –NCF-2005 तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२०के सन्दर्भ में।

सत्रीय कार्य –

25 अंक

१. वर्तमान शिक्षा प्रणाली एवं मूल्य विकास पर संवाद
२. समसामयिक भारत में शिक्षा पर संगोष्ठी
३. बालिका शिक्षा, जीवन पर्यन्त शिक्षा, अनुसूचित जन जाति शिक्षा की भूमिका पर आधारित संगोष्ठी।
४. संस्कृत सुभाषितों में शैक्षिक चिन्तन।

अध्येय ग्रन्थ–

ओड, एल.के (१९९०) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्री भूमिका, मैकमिलन, नई दिल्ली।

पाण्डेय आर.एस.(१९८८) शिक्षा दर्शन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा (उ.प्र.)।

रस्क आर.एस. (१९९०) शिक्षा के दार्शनिक आधार–राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

डागर,बी.एस. (१९८८) मूल्य शिक्षा, हरियाणा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, चंडीगढ।

ब्रूबेकर जे.एस. (१९६९) मार्डन फिलॉसफीज ऑफ एजुकेशन, मैक ग्रा हिल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

हार्न.एच.एस. (१९८०) डेमोक्रेटिक फिलॉसफी ऑफ एजूकेशन,मैकमिलन न्यूयार्क।

रेमण्ट (१९८२) प्रिन्सपल्स ऑफ एजूकेशन लांगमैन ग्रीन, लंदन।

नेल्सन वी.एच. (१९७०) मार्डन फिलॉसफीज एण्ड एजुकेशन, सेन्ट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद (उ.प्र.)

पाठक, आर.पी. एवं भारद्वाज अमिता पाण्डेय (२०१३) भारतीय समाज में शिक्षा का उदीयमान परिदृश्य, कनिष्का प्रकाशन, नई दिल्ली।

पाण्डेय के.पी. (२००५) शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी (उ.प्र.)।

मिश्र, डा. मण्डन सर्वदर्शन समन्वयः, विद्यापीठ प्रकाशन, नई दिल्ली ।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (२००५)–एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली ।

पाल, राजेन्द्र– पाठ्यचर्या शिप्रा प्रकाशन, नई दिल्ली।

अध्यापक शिक्षा –एन.सी.एफ.(२००९)– एन.सी.टी.ई. नई दिल्ली।

सिकरवारः, डा. प्रेमसिंह, (२०१६) शिक्षायाः दार्शनिकसामाजिकाधाराः, एम.बी.पब्लिशर्स, जयपुरम्।

सिकरवारः, डा. प्रेमसिंह, (२०१६) वैश्विकचिन्तकाः, एम.बी.पब्लिशर्स, जयपुरम्।

पाठक, रमेश प्रसाद(२०१९) प्राचीन भारतीय समाज साहित्य और शिक्षा, ज्ञान भारती प्रकाशन, शक्ति नगर, नई दिल्ली।

पाठक, रमेश प्रसाद एवं शर्मा, सारिका(२०१८) भारतीय शिक्षा के प्रवर्तक, कनिष्का प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली।

पाठक, रमेश प्रसाद(२०२०) मूल्य शिक्षा, कनिष्का प्रकाशन दरियागंज, नई दिल्ली।

सिकरवार, प्रेमसिंह, मलिक, पिंकी (२०२१) मूल्य शिक्षा एवं व्यावसायिक आचार, सरस्वती पब्लिकेशन, जयपुर।

ई सामग्री

स्वयंप्रभा, स्वयं, वेब लिंक, यूट्यूब, ई.पी.जी. पाठशाला, मूक्स इत्यादि।

2. अधिगम तथा विकास का मनोविज्ञान

(Psychology of Learning and Development)

कोर्स कोड = 102 | कुल क्रेडिटस = 04

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे/सप्ताह | कुल अंक= 100

कोर्स अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes)

इस कोर्स के अध्ययनोपरान्त विद्यार्थीः—

— शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति, क्षेत्र एवं महत्त्व से परिचय हो सकेंगे।

— बाल्यवस्था एवं किशोरावस्था के विशेष सन्दर्भ में विकास की विभिन्न अवस्थाओं का बोध कर सकेंगे।

— अधिगम सिद्धान्तों के सन्दर्भ से परिचित होकर अभिप्रेरणा के साथ सम्बन्ध का बोध कर सकेंगे।

— बुद्धि सिद्धान्त एवं बुद्धि मापन से अवगत होकर विशिष्ट बालकों की मनोसामाजिक विशेषताओं का विश्लेषण कर सकेंगे।

— व्यक्तित्व की प्रकृति, विकास और मानसिक स्वास्थ्य अनुरक्षण के उपायों पर आधारित परिप्रेक्ष्य का विकास कर सकेंगे।

पाठ्य—वस्तु (Content) — 75 अंक

इकाई — १ : शिक्षा मनोविज्ञान— अवधारणा (भारतीय एवं आधुनिक सन्दर्भ में) उद्देश्य, क्षेत्र एवं महत्त्व ।
मनोवैज्ञानिक विधियाँ — अन्तःदर्शन, निरीक्षण, प्रयोगात्मक विधि, समाजमिति, व्यक्तिवृत्त अध्ययन।

इकाई — २ : समग्र विकास— अवधारणा, विकास के सिद्धान्त, अवस्थाएँ, बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था में शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक, आध्यात्मिक, नैतिक विकास (पियाजे के सम्बन्ध में) तथा उनका शैक्षिक निहितार्थ।

इकाई — ३ : अधिगम एवं अभिप्रेरणा— अधिगम की अवधारणा, विशेषताएँ, प्रभावित करने वाले कारक, प्रकार (गैने के अनुसार) अधिगम के सिद्धान्त—व्यवहारवाद—थॉर्नडाइक, संज्ञानवाद—पियाजे, गेस्टालवाद कोहलर, रचनावाद— लेव वायगोत्सकी, रचनावादी परिप्रेक्ष्य में अधिगम प्रक्रिया, विद्यार्थी एवं अध्यापक की भूमिका।
अभिप्रेरणा: अवधारणा, प्रकार, मैसलो का पदानुक्रमित सिद्धान्त तथा छात्रों को अभिप्रेरित करने की प्रविधियाँ।

इकाई — ४ : बुद्धि एवं विशिष्ट बालक— बुद्धिः— अवधारणा, प्रकार, सिद्धान्त (स्पीयरमैन का द्विकारक तथा गार्डनर का बहुबुद्धि सिद्धान्त), भावात्मक बुद्धि, आध्यात्मिक बुद्धि, बुद्धि मापन—शब्दिक, अशब्दिक एवं निष्पादन परीक्षण (व्यक्तिगत एवं सामूहिक) ।

विशिष्ट बालक — अवधारणा, व्यक्तिगत विभिन्नता, प्रकार—प्रतिभाशाली, सर्जनात्मक, अधिगम अक्षम बालक (अभिप्राय, पहचान एवं निर्देशन)। सुविधावंचित विद्यार्थी—उनकी मनोसामाजिक विशेषताओं का विश्लेषण।

इकाई — ५ : व्यक्तित्व एवं मानसिक स्वास्थ्य— व्यक्तित्व की भारतीय (पंचकोश एवं त्रिगुण) एवं पाश्चात्य अवधारणा, प्रकार, निर्धारक तत्व, व्यक्तित्व का मापन (आत्मनिष्ठ, वस्तुनिष्ठ तथा प्रक्षेपी विधियाँ)

मानसिक स्वास्थ्य : अभिप्राय, उद्देश्य, अच्छे मानसिक स्वास्थ्य की विशेषताएं एवं प्रभावित करने वाले कारक। मानसिक स्वास्थ्य अनुरक्षण के उपाय। सुस्थिर जीवनशैली के कार्यक्रम।

सत्रीय कार्य—

25 अंक

निम्नलिखित में से दो।

१. मनोवैज्ञानिक परीक्षण—बुद्धि, व्यक्तित्व (अनिवार्य)

२. नैतिक विकास की विभिन्न अवस्थाओं पर आधारित प्रस्तुतीकरण।

३. किसी एक विशिष्ट बालक का व्यक्ति अध्ययन पर आधारित प्रस्तुतीकरण।

४. अधिगम के नियमों की शैक्षिक व्यावहारिक उपयोगिता पर आधारित प्रस्तुतिकरण।

अध्येय ग्रन्थ—

गुप्ता, एस.पी. (२०१०) शिक्षा मनोविज्ञान शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

मंगल, एस.के. (२००६) शिक्षा मनोविज्ञान, प्रेन्टिस हाल ऑफ इंडिया प्रा. लि. नई दिल्ली।

पाण्डेय, के.पी. (२००५) नवीन शिक्षा मनोविज्ञान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

पाण्डेय, आर.एस. (१९९५) शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

चौबे, एस.पी. (१९६५) शिक्षा मनोविज्ञान, लक्ष्मी नारायन अग्रवाल एंड सन्स, आगरा।

जायसवाल, सीताराम (१९९३), भारतीय मनोविज्ञान एवं शिक्षा, आर्य बुक डिपो, दिल्ली।

हरलॉक, ई.बी., विकासात्मक मनोविज्ञान।

सारस्वत, मालती (१९८६) शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, आलोक प्रकाशन, इलाहाबाद।

माथुर, एस.एस. (१९८५) शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

पाठक, आर.पी. (२००७) शिक्षा मनोविज्ञान—एक परिचय, राधा प्रकाशन, नई दिल्ली।

पाठक, आर.पी. (२००९) भारतीय मनोविज्ञान, राधा प्रकाशन, नई दिल्ली।

पाण्डेय,के.पी.,(२०१३) (चतुर्थ संस्करणम्),नवीन शिक्षा मनोविज्ञानम्, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी (उ.प्र.)

रेड्डी, पी. नागमुनि (प्रथम संस्करणम्) शिक्षा मनोविज्ञानम्, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठम्, तिरूपतिः, आन्ध्रप्रदेशः

सिहंः फतेह (२००५) शिक्षा मनोविज्ञानम् प्रथम संस्करणम्, आदित्य प्रकाशनम्, जयपुरम्

पद्‌ममित्रश्रीनिवासः (२०१२), शिक्षायाः मनोवैज्ञानिकाधाराः, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय जयपुरम्।

मिश्रः लोकमान्यः (२०११) आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञानम्, प्रथमसंस्करणम् मृगाक्षी प्रकाशनम्, लखनऊ

पाठक आर.पी. (२०११) शिक्षा मनोविज्ञान, पियर्सन एजुकेशन, नालेज पार्क—नोएडा (उ.प्र.)।

पाठक आर.पी.एवं भारद्वाज, अमिता पाण्डेय (२०१३) शिक्षा मनोविज्ञान के मूल तत्व, कनिष्का प्रकाशन, नई दिल्ली

सिंह, अरूण कुमार (१९९५) शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन आगरा।

भटनागर, सुरेश (२००५) शिक्षा मनोविज्ञान, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ

लाल, रमन बिहारी एवं जोशी (२००७) शिक्षा मनोविज्ञान एवं प्रारंभिक सांख्यिकी

लाल, रमन बिहारी, (२०१०) शिक्षण एवं अधिगम का मनोविज्ञान, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)

शर्मा, आर.ए. (२००५) शिक्षण अधिगम में नवीन प्रवर्तन, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)

लाल, रमन बिहारी, (२०१०) अधिगमकर्त्ता अधिगम एवं संज्ञान, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)

तिवारी, गोविन्द, शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, (उ.प्र.)

पाठक, आर. पी.(२०१९) शिक्षा का मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य, अटलांटिक प्रकाशन,नई दिल्ली।

Chauhan S.S.(1998), Advanced Educational Psychology(7th Edtion), Vikas Publishing House, N.Delhi.

Woolfolk, Anita Misra, Jha(2012) Funamental of Education Psychology Xth Ed., Pearson India, Delhi.

ई सामग्री

वेब लिंक— स्वयंप्रभा, स्वयं, यूट्यूब, ई.पी.जी. पाठशाला, मूक्स इत्यादि।

3. शिक्षण अधिगम में सूचना सम्प्रेषण प्रोद्यौगिकी

(Information Communication Technology in Teaching Learning)

कोर्स कोड = 103

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे/सप्ताह

कुल क्रेडिटस = 04

कुल अंक = 100

कोर्स अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes)

इस कोर्स के अध्ययनोपरान्त विद्यार्थी:–

- सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी एवं सम्प्रेषण के सम्प्रत्ययों का अवबोध कर सकेंगे।
- तकनीकी आधारित अधिगम एवं विभिन्न अधिगम प्रबन्धन प्रणालियों के सम्प्रत्यय को समझ सकेंगे।
- ई-संसाधन एवं ऑनलाईन आकलन परीक्षण का निर्माण एवं अनुप्रयोग कर सकेंगे।
- ई-कोर्स अभिकल्पन एवं निर्माण प्रक्रिया में अर्न्तदृष्टि प्राप्त कर सकेंगे।
- एम.एस. ऑफिस आधारित शैक्षिक कार्य हेतु कुशलताओं को संवर्द्धन कर सकेंगे।

पाठ्य–वस्तु (Content) — 75 अंक

इकाई-1 : सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी एवं उपकरण - अभिप्राय, प्रकार (परम्परागत एवं आधुनिक), शैक्षिक उपयोगिता। सम्प्रेषण- अभिप्राय, प्रक्रिया, विभिन्न माध्यम, प्रकार, बाधकतत्त्व। टेलिकॉन्फ्रेंसिग-अभिप्राय, प्रकार (ऑडियो, वीडियो एवं कम्प्यूटर), लाभ। कृत्रिमबुद्धिमत्ता -अवधारणा, महत्त्व एवं उपयोग।

आई.सी.टी.उपकरण- Slido(स्लाइडो) Meutimeter (मेन्टीमीटर) (स्लाइडो) एवं Padlet (पैडलेट) अभिप्राय, विशेषताएँ, प्रयोग, सीमाएँ एवं लाभ।

इकाई-2 : तकनीकी आधारित अधिगम एवं प्रबन्धन - अवधारणा, विशेषताएँ, शैक्षिक उपयोगिता एवं प्रकार-फ्लिप्ड अधिगम(Flipped Learning), ब्लेंडेड अधिगम(Blended Learning), ऑनलाइन अधिगम, मोबाइल अधिगम, डिजिटल और वेब अधिगम। स्मार्ट कक्षा-अभिप्राय विशेषताएँ, एवं अनुप्रयोग। शैली-समकालिक (Synchronus), असमकालिक (Asynchronus),अधिगम प्रबन्धन प्रणाली(LMS)-अवधारणा एवं प्रकार। गूगल क्लासरूम (Google Classroom) निर्माण एवं अनुप्रयोग ।

इकाई-3 : ई-संसाधन - अवधारणा, विशेषताएँ, प्रकार यथा- इमेज, टेक्स्ट, ऑडियो एवं वीडियो संसाधन, उनकी विशेषताएँ, महत्त्व, निर्माण, डिजिटल उपकरण एवं उपयोगिता। मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources)-अवधारणा, स्रोत एवं प्रयोग तथा सी.सी. लाईसेन्सिग(Creative Commons Licensing)- अवधारणा, प्रकार एवं प्रयोग।

इकाई-4 : ई-कोर्स एवं ई-आकलन उपकरण-

ई-कोर्स- अवधारणा, चतुर्थांश उपागम अभिकल्पन (ई-ट्यूटोरियल, ई-पाठ्यवस्तु, परिचर्चा मंच एवं आकलन), निर्माण सोपान, आनलाइन मंच विशेषतः स्वयं (SWAYAM) के सन्दर्भ में।

ई-आकलन उपकरण- ऑनलाइन आकलन सॉफ्टवेयर- विशेषताएँ, महत्त्व एवं प्रयोग विशेषत:- गूगल फार्म (Google Form), क्विजिज (Quizizz) एवं काहूत (Kahoot) - अभिप्राय, परीक्षण निर्माण एवं शैक्षिक प्रयोग।

इकाई-5 : एम.एस.ऑफिस एवं इंटरनेट-एम.एस.ऑफिस- **एम.एस.वर्ड**-अभिप्राय, विशेषताएँ, डाक्यूमेंट निर्माण एवं शैक्षिक उपयोग। **एम.एस.पावर पाइन्ट**- अभिप्राय, विशेषताएँ, स्लाइड- निर्माण अभिकल्पन, प्रस्तुतीकरण एवं शैक्षिक उपयोग। एम.एस. एक्सेल- अभिप्राय, विशेषताएँ, शीट निर्माण एवं शैक्षिक उपयोग। इंटरनेट, ई-मेल तथा ड्राइव- अभिप्राय, विशेषताएँ, कार्यविधि तथा शैक्षिक उपयोगिता।

सत्रीय कार्य-निम्नलिखित में से कोई दो-

25 अंक

1. कोई दो प्रकार के ई-संसाधन निर्माण।
2. कोई एक ऑनलाइन आकलन उपकरण द्वारा संरचान्तमक परीक्षण निर्माण (05 वस्तुनिष्ठ प्रश्न)।
3. एम.एस.वर्ड द्वारा प्रमाण पत्र निर्माण।
4. पावर पाइन्ट निर्माण(05 स्लाइड)
5. एम.एस एक्सेल द्वारा अंक पत्र निर्माण

अध्येय ग्रन्थ-

मंगल, एस.के. एवं मंगल उमा (2009), शिक्षा तकनीकी, प्रेन्टिस हाल, नई दिल्ली।

कुलश्रेष्ठ, एस.पी., कुमार, हेमन्त (2020), शैक्षिक तकनीकी तथा आई.सी.टी., आर. लाल बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)।

भटनागर, ए.बी. एवं भटनागर, अनुराग (2020), शैक्षिक तकनीकी एवं आई.सी.टी., लाल बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)।

शर्मा, शिल्पी एवं अन्य(2020), शिक्षा में सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी, लाल बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)।

शर्मा, सुनीता(2016), शिक्षा में तकनीकी परिप्रेक्ष्य, बुक ओशियन पब्लिकेशन, वाराणसी (उ.प्र.)

पाठक, आर.पी.,(2014) शैक्षिक तकनीकी, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

आनंद, विजय कुमार एवं नैम, राकेश (2008), इलेक्ट्रानिक मीडिया एवं सूचना प्रौद्योगिकी, रजत पब्लिकेशन्स।

पाठक, आर.पी.,(2018) शैक्षिक प्रोद्योगिकी एवं जनसंचार माध्यम, कनिष्का प्रकाशन, नई दिल्ली।

Dash, Manoj Kumar(2020), ICT in Teacher Education, , Neelkamal Publication Pvt. Ltd., New Delhi.

Arulsamy, S. and Shivaker, P.(2020), Application of ICT in Education, Neelkamal Publication Pvt. Ltd., New Delhi.

Mrunalini, T. and Ramakrishan, A.(2020), Information and Communication Technology(ICT) in Education, Neelkamal Publication Pvt. Ltd., New Delhi.

M. Vanaja, (2020), Information and Communication Technology(ICT) in Education, Neelkamal Publication Pvt. Ltd., New Delhi.

www.uou.ac.in/आई.सी.टी. की आलोचनात्मक समझ एवं उपयोग।

S. Sangamn- Microsoft Office 2000 for Windows

Ramakrishan, A.(2020), ICT Mediation In teaching Learning, Neelkamal Publication Pvt. Ltd., New Delhi.

वेब संदर्भ

1. www.swayam.gov.in
2. www.ebooks.ipude.in
3. www.swayamprabha.gov.in
4. www.form.google.com
5. www.kahoot.com

4. विद्यालय प्रबन्धन एवं नेतृत्व
(School Management and Leadership)

कोर्स कोड = 104

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे/सप्ताह

कुल क्रेडिटस = 04

कुल अंक = 100

कोर्स अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes)

इस कोर्स के अध्ययनोपरान्त विद्यार्थी:—

— विद्यालय प्रबन्धन एवं प्रशासन की अवधारणा स्पष्ट कर सकेंगे।
— विद्यालय के विभिन्न प्रकार के संसाधनों के विषय में बता सकेंगे।
— नेतृत्व तथा नियोजन के विभिन्न कार्यों एवं प्रकारों की उपयोगिता को स्पष्ट कर सकेंगे।
— गुणवत्तापूर्ण विद्यालयीय शिक्षा के आवश्यक तत्वों को स्पष्ट कर सकेंगे।
— विद्यालय प्रबन्धन से सम्बद्ध प्रावधानों तथा अभिकरणों के विषय में बता सकेंगे।

पाठ्य—वस्तु (Content)

75 अंक

इकाई — १ : प्रबन्धन की अवधारणा— प्रबन्धन की अवधारणा (भारतीय एवं पाश्चात्य परिप्रेक्ष्य) एवं कार्य, प्रशासन की अवधारणा(भारतीय एवं पाश्चात्य परिप्रेक्ष्य) प्रशासन एवं प्रबन्धन में अन्तर, विद्यालयीय प्रबन्धन का अभिप्राय, विद्यालय प्रबन्धन के कार्य, भारतीय विद्यालयों की संरचना **NEP- 2020** के सन्दर्भ में।

इकाई — २ : विद्यालयीय संसाधन— विद्यालय संसाधन का अभिप्राय एवं प्रकार। भौतिक संसाधन, मानवीय एवं ई—संसाधन, भौतिक—संसाधन (विद्यालय परिसर, विद्यालय भवन, कक्षा—कक्ष की संरचना (आकार) फर्नीचर, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, खेल का मैदान। मानवीय संसाधन—प्रधानाध्यापक, अध्यापक, कर्मचारी, छात्र एवं अभिभावक)। ई—संसाधन—(ई—रजिस्टर, ई फोलियो, ई—बुक्स, ई—लाईब्रेरी, ई—फेस रीडिंग, ई—क्रेडिट बैंक(ABC), डिजी लाकर।

इकाई — ३ : नेतृत्व तथा नियोजन— नेतृत्व की अवधारणा, नेतृत्व के सिद्धान्त एवं प्रकार—क्रियान्वितिकारी, रूपान्तरकारी तथा परिस्थितिगत शैलियाँ। प्रधानाचार्य प्रशासनिक नेता तथा अध्यापक की शैक्षिक (अकादमिक) नेता, के रूप में भूमिक प्रधानाचार्य की पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण में भूमिका, पर्यवेक्षण तथा निरीक्षण में अन्तर। नियोजन का अभिप्राय एवं प्रकार ।

इकाई — ४ : विद्यालयीय शिक्षा में गुणवत्ता — गुणवत्ता का अभिप्राय, विद्यालयीय शिक्षा में गुणवत्ता, 6 E सम्पूर्ण गुणवत्ता प्रबन्धन की संकल्पना। विद्यालयीय अभिलेख की आवश्यकता, प्रकार एवं रखरखाव। समय—सारिणी—अभिप्राय एवं निर्माण के सिद्धान्त, **NCF- 2023** के सन्दर्भ में समय सारिणी की रूपरेखा।

इकाई – ५ : विद्यालय प्रबन्धन से सम्बद्ध विधान एवं संस्थाएँ– विभिन्न संवैधानिक शैक्षिक अनुच्छेद, भारतीय शिक्षा की प्रशासनिक संरचना तथा शिक्षा निदेशालय, RTE Act, 2009, समग्र शिक्षा का अभियान, NCERT, SCERT, DIET, केन्द्र तथा राज्य बोर्ड एवं संदीपनी वैदिक शिक्षा बोर्ड का सामान्य परिचय।

25 अंक

सत्रीय कार्य–

१. भारतीय ग्रन्थों में प्रबन्धन एवं नेतृत्व।

२. विद्यालय के विभिन्न अभिलेखों में से किसी एक का विश्लेषण के आधार पर उपयोग। ।

३. विद्यालय से सम्बन्धित पोर्टफोलियों का निर्माण।

४. समय–सारिणी का निर्माण करना एवं शैक्षिक संस्थाओं से सम्बन्धित किन्हीं दो आलेखो की समीक्षा।

अध्येय ग्रन्थ–

मिश्र, भास्कर, (1995) विद्यालय व्यवस्था, भावना प्रकाशन, नई दिल्ली।

जोशी, रजनी, (1997) विद्यालय में प्रशासन एवं प्रबन्ध, शारदा पुस्तक मंदिर, इलाहबाद।

सुखिया, एस.पी., (2000) विद्यालय व्यवस्था, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, (उ.प्र.)।

पाठक, आर.पी. एवं गुप्ता शैलजा (2010) शैक्षिक प्रबन्धन, राधा प्रकाशन, नई दिल्ली।

शर्मा, आर.ए. (2005) शिक्षा तकनीकी के तत्व एवं प्रबन्धन, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)।

वर्मा, जे.पी. (2000) विद्यालय प्रबन्धन, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)।

शर्मा, आर.ए. (1995) शिक्षा प्रबन्धन, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)।

शर्मा, वी.एस. (1998) विद्यालय प्रबन्धन, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)।

भटनागर, सुरेश (1998) शैक्षिक प्रबन्धन और शिक्षा की समस्यायें, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)।

शर्मा एवं सक्सेना (2010) शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्धन, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, (उ.प्र.)।

पाठक, रमेश प्रसाद एवं शर्मा संजय(२०२१) शैक्षिक नियोजन एवं प्रकाशन, कनिष्का प्रकाशन, नई दिल्ली।

सिकरवारः, डा. प्रेमसिंह, (२०२१) शैक्षिकप्रबन्धनम्, सरस्वती पब्लिकेशन, जयपुरम्।

ई सामग्री

IGNOU- e Gyankosh (https://egyankosh.ac.in)

Uttarakhand open University (https://www.uou.ac.in)

WWW.edu.com in WWW.MOE.govt.in

WWW. CBSE.ac.in

web link-swyam, Youtube, E.P.G. Pathshala, MOOC etc.

https://hindivishwa.org/distance

https://QCI.ac.in

कोर्स कोड = 105 5. शास्त्र शिक्षण

कोर्स अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes)

इस कोर्स के अध्ययनोपरान्त विद्यार्थी:–

– विविध शास्त्रों के स्वरूप, महत्त्व एवं उपयोगिता को जानते हुए संस्कृत शास्त्रों के अध्ययन के परिप्रेक्ष्य का परिचय कर सकेंगे।
– शास्त्रों की विविध विधाओं के अध्यापन हेतु परम्परागत एवं आधुनिक शिक्षणविधियों का अवबोध कर सकेंगे।
– शास्त्रशिक्षण की पाठयोजना निर्माण योग्यता का विकास कर सकेंगे।
– शास्त्रों के शिक्षण को रोचक एवं नवीनतम स्वरूप प्रदान करने हेतु दृश्य-श्रव्य साधनों एवं कौशलों का अनुप्रयोग कर सकेंगे।
– विविध शास्त्रों में वर्णित विषयवस्तु के शिक्षण द्वारा नैतिक, चारित्रिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक मूल्यों का विकास कर सकेंगे।

निर्देश : निम्नलिखित में से किसी एक विषय का चयन करें।

5-I ज्योतिष–शिक्षण

(Methodology of Teaching Jyotisha)

कोर्स कोड = 105 (i) कुल क्रेडिटस = 04

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे/सप्ताह कुल अंक = 100

कोर्स अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes)

इस कोर्स के अध्ययनोपरान्त विद्यार्थी:–

75 अंक

– वेदाङ्ग, त्रिस्कंध ज्योतिष एवं अष्टादशाचार्य का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
– ज्योतिष शिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु सहायक उपकरणों का अनुप्रयोग कर सकेंगे।
– नैदानिक परामर्श में ज्योतिषशास्त्र की भूमिका से अवगत हो सकेगें।
– ज्योतिष शिक्षण के व्यावहारिक प्रकरण में ग्रहण एवं विभिन्न मुहूर्तों के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
– ज्योतिष शिक्षण की पाठयोजना निर्माण की योग्यता का विकास कर सकेंगे।
– ज्योतिष शिक्षण की परंपारिक एवं आधुनिक विधाओं में दक्ष हो सकेगें।
– आकलन एवं मूल्यांकन प्रक्रिया में दक्ष हो सकेगें।
– ज्योतिष शिक्षण की संस्थाओं से परिचित हो सकेगें।

पाठ्य–वस्तु (Content)

इकाई –१ : ज्योतिष परिचय

- वेदाङ्ग, परिचय।
- त्रिस्कंध ज्योतिष– परिचय, उद्देश्य ।
- अष्टादशाचार्य।
- ज्योषितशास्त्र का महत्त्व एवं उद्देश्य, वैज्ञानिकता एवं सामाजिक उपयोगिता, ज्योतिषशास्त्र में मनोवैज्ञानिक तत्त्व ।

इकाई –२ : ज्योतिष शिक्षण के साधन एवं उपकरण–

- शिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु सहायक उपकरणों का महत्त्व ।
- पंचाङ्ग–परिचय।
- वेधशाला–परिचय एवं उपयोगिता।
- गोल, शंकु, तुरीययंत्र, दूरदर्शक (Telescope) ।
- संगणक, दूरदर्शन एवं अन्य दृश्य श्रव्य उपकरणों की उपयोगिता।

इकाई –३ : नैदानिक परामर्श में ज्योतिषशास्त्र की भूमिका–

- ग्रहों की प्रकृति।
- राशियों की प्रकृति।
- कालपुरूष का परिचय।
- द्वादश भाव, सप्तवर्ग– होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवांश, द्वादशांश त्रिंशांश चक्रों का अभिप्राय एवं उपयोग।
- विंशोत्तरी दशा का प्रभाव ।
- निदान एवं परामर्श प्रक्रिया ।

इकाई –४ : ज्योतिष शिक्षण के व्यवहारिक प्रकरण–

- ग्रहण (सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण)।
- मुहूर्त (अक्षरारम्भ, विद्यारम्भ, समावर्तन,यात्रा एवं विवाह)।
- संवत्सरफल।

इकाई –५ : ज्योतिष शिक्षण – अधिगम

- पाठयोजना निर्माण –परम्परागत एवं आधुनिक दृष्टि से।
- वेध विधि, आगमन–निगमन, खोज विधि परियोजना विधि ।
- मूल्यांकन– शास्त्रार्थ, शलाका परीक्षा, उपलब्धि परीक्षण एवं निदानात्मक परीक्षण (अभिप्राय एवं विशेषताएँ)।
- ज्योतिषशिक्षण की आधुनिक दृष्टि।
- ज्योतिषशिक्षण की संस्थाएँ।

सत्रीय कार्य– **25 अंक**

१ - दत्तकार्य (इकाई सम्बन्धित)

२ - पाठयोजना निर्माण एवं प्रस्तुतीकरण

अध्येय ग्रन्थ–

- मानसागरी
- फलदीपिका
- सूर्यसिद्धान्त
- बृहत्संहिता
- मुहूर्तचिन्तामणि

गुप्ता, एस.पी.(२०१०) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

गोरखप्रसाद (२०१०) भारतीय ज्योतिष का इतिहास, उ.प्र. हिन्दीं संस्थान, लखनऊ ।

झा अच्युदानन्द(२०१०) लघुपराशरी– मध्यमपराशरी, चोखम्बा अमरभारती प्रकाशन वाराणसी।

झा नागेन्द्र(२००७) ज्योतिषशिक्षण विधि, अभिषेक प्रकाशन, दिल्ली।

झा नागेन्द्र (२०१३) प्राचीन और अर्वाचीन शिक्षा पद्धति, अभिषेक प्रकाशन, दिल्ली।

झा, सीताराम गोलपरिभाषा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन।

झा, सुरकान्त(२०१७) भारतीय कुण्डली विज्ञान, चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस वाराणसी।

झारखण्डी, शिवनाथ शंकरबालकृष्णदीक्षित विरचित भारतीय ज्योतिष, उ.प्र. हिन्दी संस्थान लखनऊ ।

पाण्डेय, रामचन्द्र(१९८९): बृहद अवकहडाचक्रम, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।

पाण्डेय, रामचन्द्र(२०२०) प्राच्य विद्या परिशीलन (संकलन एवं संपादन मीनाक्षी मिश्र), नैसर्गिक शोध संस्थान, वाराणसी।

पाण्डेय, सदानन्द (२०२२) पंचांग परिचय एवं मुर्हुत दर्पण चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।

मिश्र, शिवाकान्त(२०११): ज्योतिष शिक्षणम्, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय जयपुर।

शर्मा, मुकेश(२०१८): ज्योतिष शिक्षणविधयः भारतीय ज्योतिष, मध्य प्रदेश।

शर्मा कल्याणदत्त (२००२), ज्योतिष पीयूष, वेदमातागायत्री ट्रस्ट, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार।

शास्त्री, नेमीचन्द(२००८) भारतीय ज्योतिष, भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली।

शर्मा, आर.ए.(२००२) शिक्षा के तकनीकी आधार, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ, उ.प्र.।

शर्मा, कल्याणदत्त, वेधशाला परिचय, श्री.ला.ब.शा.रा.संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली।

5-II साहित्य–शिक्षण
(Methodology Of Teaching Sahitya)

कोर्स कोड = 105 (ii) — कुल क्रेडिटस = 04
क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे/सप्ताह — कुल अंक = 100

कोर्स अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes)

इस कोर्स के अध्ययनोपरान्त विद्यार्थी:–

१– विधा के अनुसार साहित्य शिक्षण के स्वरूप एवं महत्त्व का वर्णन कर सकेंगे।
२– काव्यशास्त्रीय तत्त्वों का विश्लेषण कर सकेंगे।
३– रसानुभूति एवं सौन्दर्यानुभूति की विविध परिप्रेक्ष्य में व्याख्या कर सकेंगे।
४– साहित्य शिक्षण की विविध विधियों में अन्तर कर सकेंगे।
५– विविध उपागमों के आधार पर पाठयोजनाओं का निर्माण कर सकेंगे।

पाठ्य–वस्तु (Content) — **75 अंक**

इकाई–१ साहित्य शिक्षण का स्वरूप–: साहित्य परिचय, साहित्य शिक्षण की आवश्यकता, स्वरूप, महत्त्व एवं उद्देश्य (संज्ञानात्मक–भावात्मक) विधाओं के अनुरूप(गद्य,पद्य एवं नाटक) शिक्षण।
इकाई–२ काव्यशास्त्रीय तत्त्वों का परिचय–: शास्त्रगत पृष्ठ भूमि के आधार पर छन्द, अलंकार, रस, गुण, रीति का संक्षिप्त परिचय एवं अध्यापन विधियाँ।
इकाई–३ रसानुभूति एवं सौन्दर्यानुभूति की उपयोगिता–: कल्पना, सौन्दर्यानुभूति, रसानुभूति का संक्षिप्त परिचय एवं सौन्दर्यानुभूति में अंलकारों की उपयोगिता तथा रसानुभूति में विविध काव्यशास्त्रीय तत्त्वों की उपयोगिता।
इकाई–४ साहित्य–शिक्षण की विधियाँ–: पारम्परिकविधि, व्याख्याविधि, टीकाविधि, स्वाध्याय विधि क्रीडा–विधि, खण्डान्वय–दण्डान्वय विधि एवं भाषा प्रयोगशाला द्वारा अभ्यास, रचनावादी उपागम आधारित शिक्षणविधियाँ (प्रत्येक विधि की सोदाहरण प्रस्तुति)।
इकाई–५ साहित्य शिक्षण में नवाचार एवं पाठयोजना–: साहित्य शिक्षण में दृश्य श्रव्य उपकरण एवं शिक्षण अधिगम सामग्री तथा विविध विधाओं के अनुरूप पाठयोजना निर्माण। रचनावादी उपागम आधारित पाठयोजना निर्माण(विद्यालय पाठयक्रम के सन्दर्भ में)।

सत्रीय कार्य– — **25 अंक**

१– विविध छन्दों का लयसम्बद्ध अभ्यास।
२– पाठयोजना निर्माण एवं प्रस्तुतीकरण।
३– संस्कृत साहित्य के विविध स्तरीय पाठयक्रम का विधा के अनुसार विश्लेषण।

अध्येय ग्रन्थ–

सफाया, आर.एन., (1985) संस्कृतशिक्षण, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी,चंडीगढ, हरियाणा।

पाण्डेय, आर.एस., (1995) संस्कृतशिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, उ.प्र.. मिश्र, लोकमान्य, (2005) साहित्यशिक्षणम्, लोकमान्य प्रकाशन, लखनऊ

उपाध्याय, बी.के.एवं मिश्र, घनश्याम, (2000) साहित्यशिक्षणपद्धति, भारतीय विद्या संस्थान, वाराणसी, उ.प्र.

एन.लता,(2007)साहित्यशिक्षणविधयः, राष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्, तिरूपतिः।

द्विवेदी, वाचस्पति, (1985) संस्कृत शिक्षण विधि, सुशील प्रकाशन, पटना, बिहार।

शर्मा च.ल.ना. एवं सिंह फतेह, (1997) संस्कृतशिक्षणम्-नवीनप्रविधयश्च, आदित्यप्रकाशनम्, जयपुरम्।

आप्टे, डी.जी एण्ड डोगरे, पी.के., (1990) टीचिंग ऑफ संस्कृत इन सेकण्डरी स्कूल।

सिंह, कर्णी, (1990) संस्कृतशिक्षण, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

उपाध्याय, भुवनेश, (1995) संस्कृतशिक्षणम्, भारतीय विद्या प्रकाशन जगतगंज, वाराणसी (उ.प्र.)।

मित्तलः, संतोष, (2020) संस्कृतशिक्षणम्, नवचेतनाप्रकाशनम्, जयपुरम्।

शास्त्री, कलानाथ, (1995)आधुनिक काल का संस्कृत गद्य साहित्य, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली।

ई-सामग्री -वेब लिंक, स्वयं प्रभा, स्वयं, यूट्यूब, ई.पी.जी. पाठशाला, मूक्स।

5-III दर्शन-शिक्षणम्

(Methodology of Teaching Darshana)

कोर्स कोड = 105 (iii)
क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे/सप्ताह

कुल क्रेडिटस = 04
कुल अंक = 100

कोर्स अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes)

इस कोर्स के अध्ययोपरान्त विद्यार्थीः–

- दर्शनस्य सम्प्रत्ययान्तस्सबन्धानाम् अवबोधः कर्त्तुं शक्ष्यन्ति।
— दर्शनशिक्षणस्य विविधविधीनामवबोधः कर्त्तुं शक्ष्यन्ति। ।
— भारतीयदर्शनानां परिचयः प्राप्तुं समर्थाः भविष्यन्ति।
— सामयिकपद्धत्या दर्शनविषयमवगन्तुं समर्थाः भविष्यन्ति।
— विश्लेषणात्मकचिन्तनस्य क्षमताः अभिवृद्धिः कर्त्तुं शक्ष्यन्ति ।

पाठ्यवस्तु (Content)

75 अंक

इकाई – १ : भारतीय– पाश्चात्यदर्शनानां सम्प्रत्ययः, दर्शनमहत्त्वम्, विविधविषयैः सह दर्शनस्य सम्बन्धः।
इकाई – २ : कथाविधिः, निदर्शनविधिः, स्वाध्यायविधिः, व्याख्याविधिः नाटकविधिः च ।
इकाई –३: प्रमुखप्राचीनभारतीयदर्शनानां संक्षिप्तपरिचयः, समसामायिकभारतीयदर्शनपरिचयः श्रीमद्भगवद्गीतापरिचयः।

इकाई –४ :दर्शनशिक्षणे अन्तर्जालम् अन्यदृश्यश्रव्योपकरणानि।

इकाई –५: ओण् लैन् माध्यमेन दर्शनाध्ययनम्, विद्यालयस्तरीयदर्शनशिक्षणे राष्ट्रियमुक्तविद्यालयस्य उद्यमाः, दर्शनसंस्था परिचयः– भारतीयदार्शनिकनुसन्धानपरिषद्।

सत्रीयकार्यम्

25 अंक

१–दर्शनविषयकं पाठयोजनानिर्माणम्।

२–संस्कृतेतरभाषासु दार्शनिककृतीनां परिचायकलेखनम्। यथा – तुलसीदासकृतिः, विद्यापतिः, कबीरदासः, लल्लेश्वरी। प्रायोगिककार्यम्।

३–भारतीयं पाश्चात्यं वा दार्शनिकमधिकृत्य कक्ष्यायां मौखिकप्रस्तुतिः।

प्रायोगिककार्यम्

I.C.P.R. संस्थायाः जालपटलसन्दर्शनं तत्कार्यक्रमपरिचयप्राप्तिश्च।

सहायकग्रन्थ–जालपटलसूची

१. पि. रामचन्द्रुडु प्रो. – पाश्चात्यतत्त्वशास्त्रेतिहासः।

२. सर्वदर्शनसमन्वयः – श्री.ला.ब.शा.रा.संस्कृतविश्वविद्यालयः।

३. झा, उदयशङ्करः – संस्कृतशिक्षणम्

४. श्रीमद्भगवद्गीता – (मूलम्) गीताप्रेस् संस्करणम्

५. लाल कुमार वसन्त समकालीन भारतीय दर्शन मोती लाल बनारसी दास दिल्ली।

६. **MOOCS** द्वारा दर्शनव्याख्या – कस्यचित् विदुषः।

5-IV व्याकरण-शिक्षण

(Methodology of Teaching Vyakarana)

कोर्स कोड = 105 (iv) | कुल क्रेडिटस = 04

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे/सप्ताह | कुल अंक = 100

कोर्स अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes)

इस कोर्स के अध्ययनोपरान्त विद्यार्थी:–

- व्याकरण शास्त्र के इतिहास के विषय में पाणिनीय व्याकरण की वैज्ञानिकता का अवबोध कर सकेंगे।
– व्याकरण शिक्षा की अद्यतन विधियों का अनुप्रयोग कर सकेंगे।
– व्याकरण शिक्षण की प्राचीन विधियों को समझ सकेंगे।
– व्याकरण शिक्षण में दृश्य श्रव्योपकरण का प्रायोगिक व्याकरण में अनुप्रयोग कर सकेंगे।
– भाषा प्रयोगशाला तथा व्याकरण शिक्षण में सगंणक का अनुप्रयोग कर सकेंगे।

पाठ्य–वस्तु (Content) — 75 अंक

इकाई–१: व्याकरणशास्त्र शिक्षण का इतिहास, स्वरूप, उद्देश्य, व्याकरण शास्त्र का भाषावैज्ञानिक महत्त्व, एवं पाणिनीय व्याकरण की वैज्ञानिकता।

इकाई–२: व्याकरण शिक्षण की अद्यतन विधियाँ रचनात्मक विधि, रूपान्तरण विधि एवं जननात्मक (सम्भाषण विधि) विधियों का व्याकरण शिक्षण में महत्त्व एवं उच्चारण प्रशिक्षण।

इकाई–३: व्याकरण शिक्षण की विधियाँ–पारम्परिक, आगमन–निगमन, ह्यूरिस्टिक एवं प्रायोजना विधि, समस्या विधि। इन विधियों की पाठयोजना के आधार पर कारक, लकार, संधि, समास, तद्धित, स्त्रीप्रत्यय, विशेषण–विशेष्य भाव एवं वाच्यों का पाठन एवं अभ्यास।

इकाई–४: व्याकरण शिक्षण में दृश्य–श्रव्योपकरण का प्रयोग, प्रायोगिक व्याकरण (Functional Grammar)

इकाई–५: भाषाप्रयोगशाला तथा व्याकरण शिक्षण में संगणक का प्रयोग, पाठयोजना निर्माण एवं सरल संस्कृत के माध्यम से व्याकरण पाठन के प्रकार एवं अभ्यास।

सत्रीय कार्य– — 25 अंक

१ – संस्कृत भाषा कौशलों का प्रस्तुतीकरण।

२ – भाषा प्रयोगशाला अन्यप्रयोग आधारित प्रतिवेदन।

३ – व्याकरण शास्त्र शिक्षण आधारित पाठयोजना निर्माण एवं प्रस्तुतीकरण।

४ - विभिन्न पाठ्याशों में व्याकरण सम्बद्ध सम्प्रत्ययों का चयन।

५ - दत्तकार्य(इकाई सम्बन्धित)।

अध्येय ग्रन्थ–

पाण्डेय, आर.एस., (1995) संस्कृतशिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, उ.प्र.

उपाध्याय, बी.के.एवं देवनाथन आर., (1995) व्याकरण शिक्षण विधि, भारतीय विद्या संस्थान, वाराणसी, उ.प्र.।

शुक्ल, रजनीकान्त, व्याकरण शिक्षण, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति ।

शर्मा, च.ल.ना. एवं सिंह फतेह(1997) संस्कृतशिक्षणं नवीनप्रविधयश्च, आदित्य प्रकाशन, जयपुरम्।

मित्तल, संतोष(1997) संस्कृत शिक्षणं, लाल बुक डिपो, मेरठ उ.प्र.।

द्विवेदी, वाचस्पति, (1985) संस्कृत शिक्षण विधि, सुशील प्रकाशन पटना विहार।

शर्मा, परमेश एवं आर्यः, शिवदत्त (2024), व्याकरणशिक्षणम्, अमर ग्रन्थ पब्लिकेशन, दिल्ली।

ई सामग्री

वेब लिंक- स्वयं प्रभा, स्वयं, यूट्यूब, ई.पी.जी. पाठशाला, मूक्स।

5-V वेद-शिक्षण

(Methodology of Teaching Veda)

कोर्स कोड = 105 (v)
क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे/सप्ताह

कुल क्रेडिट्स= 04
कुल अंक = 100

कोर्स अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes)

इस कोर्स के अध्ययनोपरान्त विद्यार्थीः—

– वेदों के महत्त्व, उद्देश्य तथा शिक्षण विधियों से परिचित हो सकेंगे।
– स्वाध्याय की आवश्यकता का बोध कर सकेंगे।
– वेदों के मूल पाठों के महत्त्व को जान सकेंगे।
– वेदों के प्राचीन एवं नवीन व्याख्याकारों की समीक्षा कर सकेंगे।
– वेदशिक्षण तथा प्रचार के लिए समर्पित संस्थाओं के योगदान से अवगत हो सकेंगे।

पाठ्य—वस्तु (Content)

75 अंक

इकाई—१ : वेदों का महत्त्व, वैदिकसंस्कार शिक्षणोद्देश्य, वेदशिक्षण विधियाँ

इकाई—२ : स्वाध्याय की आवश्यकता। आधुनिक काल में वेद परीक्षाएँ।

इकाई—३ : वेदों के मूल पाठों के व्याख्यान में मीमांसा—कल्पसूत्र—निरूक्त आदि का महत्त्व।

इकाई—४ : वेदों के प्राचीन एवं नवीन व्याख्याकारों की समीक्षा।

इकाई—५ : वेदशिक्षण तथा प्रचार के लिए समर्पित संस्थाओं का अध्ययन—जैसे—वेदविद्याप्रतिष्ठान, वेदविश्वविद्यालय आदि।

सत्रीय कार्य—

25 अंक

१— दत्त कार्य ।
२— पाठयोजना निर्माण एवं प्रस्तुतिकरण ।
३— वेदपाठ विधाओं की प्रस्तुति।
४— सम्बन्धित वेद गुरूकुलों का जालपटलीय सन्दर्शन अथवा साक्षात् अवलोकन।

अध्येय ग्रन्थ

सायण आचार्य, वेदभाष्यभूमिका (चारों वेदों का), चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
दयानन्द महर्षि, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, राम लाल कपूर ट्रस्ट, दिल्ली।
सातवलेकर, श्रीपाद दामोदर, ऋग्वेद का सुबोध भाष्य, स्वाध्याय मण्डल, किला पारडी, गुजरात।
वेदपरिचयः, श्री अरविन्द आश्रम, पुदुच्चेरी
www. mpsvvujjain.org
www. msrvvp.ac.in

5-VI कर्मकाण्ड शिक्षण

(Methodology of Teaching Karmakanda)

कोर्स कोड = 105 (vi)
क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे/सप्ताह

कुल क्रेडिट्स= 04
कुल अंक = 100

कोर्स अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes)

इस कोर्स के अध्ययनोपरान्त विद्यार्थी:–

- कर्मकाण्ड के सम्प्रत्यय, सामाजिक आवश्यकता, उपयोगिता और महत्त्व से परिचित हो सकेंगे।
- भारतीय देवता संकल्प के परिचय का बोध कर सकेंगे।
- कर्मकाण्ड का ज्योतिष, धर्मशास्त्रादि से सम्बन्ध ज्ञात कर सकेंगे।
- कर्मकाण्ड शिक्षण– प्राचीन और आधुनिक विधाओं से परिचित हो सकेंगे।
- कर्मकाण्डीय सामग्रियों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

पाठ्य–वस्तु (Content)

75 अंक

इकाई–१ : कर्मकाण्ड का सम्प्रत्यय, कर्मकाण्ड की सामाजिक आवश्यकता, उपयोगिता और महत्त्व।
इकाई–२ : भारतीय देवता संकल्प का परिचय।
इकाई–३ : कर्मकाण्ड का ज्योतिष, धर्मशास्त्रादि से सम्बन्ध ।
इकाई–४ : कर्मकाण्ड शिक्षण– प्राचीन और आधुनिक विधाएँ।
इकाई–५ : कर्मकाण्डीय सामग्रियों का परिचय।

सत्रीय कार्य–

25 अंक

१–कर्मकाण्डीय क्रियाओं का पारिस्थितिकीय महत्त्व।
२–पाठयोजना निर्माण एवं प्रस्तुतीकरण।
३–पञ्चोपचार, षोडशोपचार तथा चतु:षष्टि उपचार पर आधारित प्रस्तुति।

अध्येय ग्रन्थ–

प्रमेय पारिजात, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
सर्वदर्शनसमन्वय, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
पाठक, आर.पी., (2010) प्राचीन भारतीय शिक्षा कनिष्का प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली।

ई सामग्री

वेब लिंक स्वयं प्रभा, स्वयं, यूट्यूब, ई.पी.जी. पाठशाला, मूक्स।

Semester E.P.C-I

सम्प्रेषण कौशल

Communication Skills

कोर्स कोड 111(i) — कुल क्रेडिट्स-02

क्रियान्वयन घण्टे: 02 घण्टे/सप्ताह — कुल अंक–50

कोर्स अधिगम परिणाम–(Course Learning Outcomes)

इस कोर्स के अध्ययनोपरान्त विद्यार्थीः–

– सम्प्रेषण कौशल के सैद्धान्तिक पक्षों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

– शब्दकोश एवं वाक्य निर्माण के नियमों का अवबोध कर सकेंगे।

– स्व एवं सर्जनात्मक अभिव्यक्ति एवं प्रस्तुतीकरण कर सकेंगे।

पाठ्य–वस्तु (Content)

१. सम्प्रेषण एंव सम्प्रेषण प्रक्रिया के तत्त्व ।

२. शाब्दिक सम्प्रेषण ।

३. अशाब्दिक सम्प्रेषण ।

४. सम्प्रेषण प्रक्रिया के बाधक तत्त्व ।

५. प्रभावी सम्प्रेषण ।

६. शब्द भण्डार में अभिवृद्धि–लिंग ज्ञानम् (शब्दकोशआधार पर)

७. वाक्य निर्माण। बृहदधातुरूपावली के आधार पर समानार्थक क्रिया पदों का प्रयोगाभ्यास।

८. स्व परिचय

९. अध्यापक कुशल संप्रेषक के रूप में

नोटः– तीनो भाषाओं अंग्रेजी, हिन्दी एवं संस्कृत में अनिवार्य।

i **निष्पादन कार्य**

- किसी एक प्रकरण पर अभिव्यक्ति देना। (अंक 10)
- स्व का परिचय प्रस्तुत करना। (अंक 10

ii **प्रलेखन (Documentation)** किसी एक भाषा अंग्रेजी/हिन्दी/संस्कृत में।

- सम्प्रेषण कौशल का सैद्धान्तिक पक्ष (अंक 10)
- शब्दकोष निर्माण (अंक 10)
- सर्जनात्मक अभिव्यक्ति (किसी एक विषय पर) (अंक 10)

E.P.C-II

सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग

(Application of Information & Communcatiion Technology)

कोर्स कोड 111(ii)
क्रियान्वयन घण्टे: 02 घण्टे/सप्ताह

कुल क्रेडिट्स-02
कुल अंक-50

कोर्स अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes)

इस कोर्स के अध्ययोपरान्त विद्यार्थी:-

- **शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में आई.सी.टी. के अुप्रयोग से अवगत हो सकेंगे।**
- ऑनलाईन आकलन प्रपत्र निर्माण कर सकेंगे।
- आईसीटी उपकरणों का अनुप्रयोग कर सकेंगें।
- अधिगम प्रबन्धन प्रणाली(LMS) का प्रयोग कर सकेंगें।

पाठ्य-वस्तु:

1. **सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी का महत्व**
2. **शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में आई.सी.टी. का अुप्रयोग**
3. अधिगम प्रबन्धन प्रणाली(LMS)
4. **आकलन प्रक्रिया में आई.सी.टी. का अुप्रयोग**
5. **प्रबन्धन में आई.सी.टी. का अुप्रयोग**

निष्पादन कार्य

(10*4=40)

1. गूगल फार्म निर्माण तथा परीक्षण
2. काहूत द्वारा क्विज (Quiz) निर्माण।
3. आईसीटी उपकरणों का प्रयोग स्लाइडो, पेडलेट एवं मेन्टीमीटर (Slido, Padlet and Mentimeter)।
4. गूगल कक्षा(Google Classroom) निर्माण एवं प्रयोग।

प्रलेखन कार्य (Documentation)

सूचना सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी का सैद्धान्तिक पक्ष। (10 अंक)